<table>
<thead>
<tr>
<th>अध्याय</th>
<th>विवरण</th>
<th>पृष्ठ सं&lt;&gt;</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अध्याय—एक</td>
<td>समस्या और शोध विधि</td>
<td>1–7</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[1] विषय का महत्व और इस पर अनुसंधान की आवश्यकता</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[2] समस्या कथन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[3] इस अध्यय का परिभाषीकरण</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[4] परिसीमन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[5] इस अध्यय के उद्देश्य</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[6] शोध विधि</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अध्याय—दो</td>
<td>समबद्ध साहित्य</td>
<td>8–24</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[1] समबद्ध साहित्य विवेकण</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[2] विवेक एवं तुलना</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अध्याय—तीन</td>
<td>भारत में धर्मनिरपेक्षता का विकास और उसका संवैधानिक स्वरूप</td>
<td>25–57</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[1] यूरोप में धर्मनिरपेक्षता का उदय</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[2] जार्ज जैकब होलीओक द्वारा सं 1846 में धर्मनिरपेक्षता की व्याख्या और इसकी अवधारणा में परिवर्तन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[3] सन् 1870 में चालस ब्राह्मण के नेतृत्व में धर्मनिरपेक्षता की नयी व्याख्या</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[4] डा एनीवेनसेंट द्वारा दिया गया धर्मनिरपेक्षता का आधुनिक स्वरूप</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[5] भारत में धर्मनिरपेक्षता की पृष्ठभूमि</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[6] स्वतंत्र भारत के संविधान में धर्मनिरपेक्ष शिक्षा का प्रारम्भ</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अध्याय—चार</td>
<td>नैतिक शिक्षा के बारे में विभिन्न शिक्षा आयोगों, महापुरुषों एवं विद्वानों द्वारा दिये गये सुझाव</td>
<td>58–86</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[1] स्वतंत्र भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग [1949] द्वारा धार्मिक शिक्षा का प्रारम्भ</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
अध्याय-पाँच

नैतिक शिक्षा के तात्पर्य और इसकी वर्तमान स्थिति 87-118

[1] नैतिक शिक्षा का अर्थ (मुल्यों की शिक्षा)
[2] नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा में अंतर और सम्बन्ध
[3] नैतिक शिक्षा का आधार
[4] विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति एवं धर्मनिरपेक्षता का अपरोध
[5] भारतीय विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति
[6] उत्तर प्रदेश में नैतिक शिक्षा की स्थिति

अध्याय-छः:

भारत के मुख्य चार धर्मों की सार्वभौम एकता द्वारा नैतिक शिक्षा 119-205

[1] धर्मों और विज्ञान के एकत्र द्वारा नैतिक शिक्षा का बीजारोपण

धर्म और विज्ञान की एकता

संसार में यथार्थ दुष्परिवारों के लिए धर्म व विज्ञान दोपी नहीं

धर्म व विज्ञान में एकता अन्तर्भित है

धर्म व विज्ञान की एकता संसार में शांति स्थापित करने का मार्ग है

वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुरूप इस घोषणा को वैज्ञानिक धर्म का स्वरूप देने की आवश्यकता है

इस एकत्र में ही नैतिकता का मूल बीज छिपा है

शिक्षाविदों-शिक्षकों का दायित्व

सभी धर्मों में अतिवादः से रहित होकर स्वतंत्र मध्यम मार्ग अपनाने का सुझाव दिया गया है

ईश्वरीय प्रकृति में हैत्याव हैं

वैज्ञानिक धर्म एक महत्वी आवश्यकता
सार्वभौमिक धर्म—विज्ञान अथवा सार्वभौमिक सहमति
ऐसे सार्वभौम की शिक्षा देना अनिवार्य कर्तव्य
धर्मों में सहमति
धर्मों में यदि कुछ अन्तर मिलता है तो वह सार्थक
बातों में, भाषा अथवा शब्दों में
सभी धर्मों में सार्वभौम व असार्वभौम बातों का विभाजन
सभी धर्मों में तीन प्रमुख मार्ग
धर्म के तीन मार्गों की शिक्षा विद्या हेतु उपादेयता
[2] सभी धर्मों के बौद्धिक पथ या ज्ञान मार्ग में पाये जाने
वाले समान सत्य
ईश्वर और ईश्वरीय प्रकृति
सभी धर्म नैतिकता की अधिग आधारशिला रख देते हैं
सार्वभौम एक ही आत्मा के बहुत से नाम हैं
संसार चक्क, नवजीवन या पुनर्जनन
कर्मसूत्र मुन्नार पुरस्कार—दण्ड
परलोक, अदरकल्व अथवा अन्य प्राणियों के संसार
साधुशास्त्र अथवा अनुश्रुताओं का नियम
आध्यात्मिक साधनां की एक दैवकलीन परम्परा
जीवन का लक्ष्य स्वात्मा की सबमें अनुभव करना
[3] महात्मागंग में पाये जाने वाले समान सत्य
पाँच प्रधान गुण, आचरण या अनुशासन
माता—पिता, गुरुजनों और बड़े के प्रति सम्मान
नैतिक शिक्षा हेतु स्वर्णिम नियम
अविनाशी सदृशा और नष्टकारी पाप
दो मूल पापों का एक बीज
सभी गुणों का एक बीज तत्व
मानव में ईश्वरस्वरूप
[4] कर्म मार्ग में समान बातें
प्रार्थना
पाप या अपराध की स्वीकारकृत या प्राप्तिकृत
tरह—रह के दान दया और करुणापूर्ण कार्य
दैवी प्रकाशन
ईश्वर के पवित्र स्थान
सभी धर्मों में धार्मिक त्योहार, जुलूस, पवित्र दिवस,
समारोह, लीलाये
<table>
<thead>
<tr>
<th>अध्याय—सात</th>
<th>नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम माध्यमिक विद्यालयों के कुछ शिक्षकों के मत में नैतिक शिक्षा का स्वरूप</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>[1] भूमिका</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>[2] अध्ययन से प्राप्त परिणाम</td>
</tr>
<tr>
<td>अध्याय—आठ</td>
<td>निष्कर्ष एवं सुझाव</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>भविष्य में विषय से समर्पित शोध के सुझाव</td>
</tr>
<tr>
<td>परिशिष्ट</td>
<td>206–218</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>219–225</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>226–238</td>
</tr>
</tbody>
</table>